ध्येय IAS
most trusted since 2003
DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims
16 November 2024

भारत का नवीकरणीय ऊर्जा विकास

सन्दर्भ: हाल ही में भारत के अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में अक्टूबर 2023 से अक्टूबर 2024 तक उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जोकि स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण के प्रति देश की प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत निर्धारित पंचामृत लक्ष्यों के अनुरूप अपने अक्षय ऊर्जा (RE) लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

नवीकरणीय ऊर्जा विकास की मुख्य विशेषताएँ (2023 – 2024)

- **कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता:**
  - » भारत की कुल स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 24.2 गीगावाट (13.5%) बढ़कर अक्टूबर 2023 में 178.98 गीगावाट से अक्टूबर 2024 में 203.18 गीगावाट हो जाएगी।
  - » परमाणु ऊर्जा सहित कुल गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता 2024 में बढ़कर 211.36 गीगावाट हो जाएगी, जबकि 2023 में यह 186. 46 गीगावाट थी।
- **सौर ऊर्जा वृद्धि:**
  - » सौर ऊर्जा क्षेत्र में 20.1 गीगावाट (27.9%) की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिससे अक्टूबर 2023 में 72.02 गीगावाट से बढ़कर अक्टूबर 2024 में 92.12 गीगावाट हो गई।
  - » कार्यान्वयनाधीन परियोजनाओं और निविदाकृत परियोजनाओं सहित कुल सौर क्षमता अब 250.57 गीगावाट हो गई है, जो पिछले वर्ष 166.49 गीगावाट थी।
- **पवन ऊर्जा विकास:**
  - » पवन ऊर्जा में स्थिर वृद्धि हुई है, इसकी स्थापित क्षमता 7.8% बढ़कर अक्टूबर 2023 में 44.29 गीगावाट से अक्टूबर 2024 में 47.72 गीगावाट हो गई है।
  - » पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए पाइपलाइन में कुल क्षमता 72.35 गीगावाट तक पहुंच गई है, जोकि पवन ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

नवीकरणीय ऊर्जा मिश्रण में जलविद्युत और परमाणु ऊर्जा का योगदान:

- **बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ:**
  - » अक्टूबर 2024 तक, बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ भारत के नवीकरणीय ऊर्जा पोर्टफोलियो में 46.93 गीगावाट का योगदान देंगी, जिससे देश के हरित ऊर्जा मिश्रण में और विविधता आएगी।
- **परमाणु शक्ति:**
  - » परमाणु ऊर्जा ने 8.18 गीगावाट का योगदान दिया, जिससे भारत की स्वच्छ, विश्वसनीय ऊर्जा स्रोतों की बढ़ती आवश्यकता को पूरा किया गया।
  - » यह योगदान इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भारत नवीकरणीय ऊर्जा के लिए एक व्यापक और विविध दृष्टिकोण अपना रहा है, जिसमें संतुलित और लचीले ऊर्जा भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए सौर, पवन, जल और परमाणु ऊर्जा को मिलाया जा रहा है।

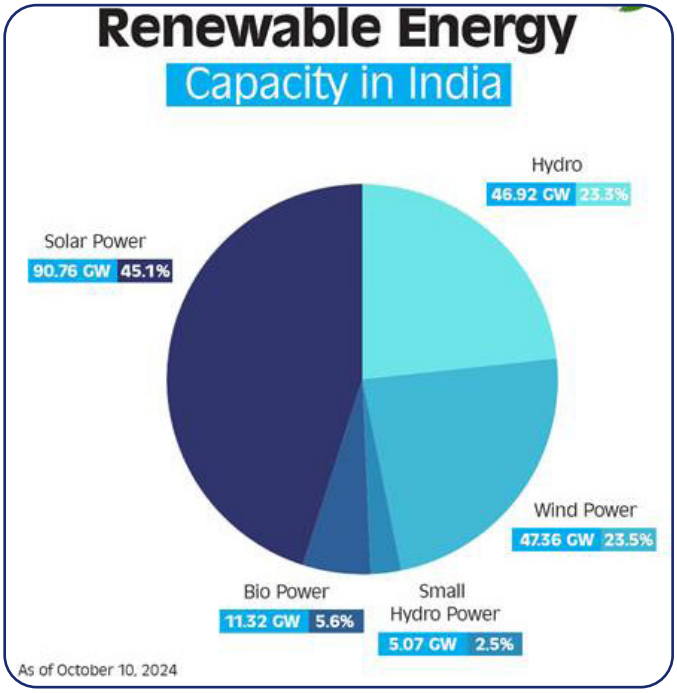

भारत की नवीकरणीय ऊर्जा वृद्धि के पीछे प्रमुख चालक:

- **पंचामृत लक्ष्य:**
  - » भारत का लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल करना है, जिससे जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता काफी कम हो जाएगी।
  - » 2030 तक भारत की कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% सौर, पवन और अन्य स्वच्छ ऊर्जा समाधानों सहित नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के माध्यम से पूरा किया जाएगा।
  - » भारत ने 2021 और 2030 के बीच अपने अनुमानित कार्बन उत्सर्जन को एक अरब टन तक कम करने की योजना बनाई है, जिसका उद्देश्य अपने कार्बन फूटप्रिंट को न्यूनतम करना और वैश्विक जलवायु लक्ष्यों में योगदान देना है।
  - » देश का लक्ष्य 2005 के स्तर के आधार पर 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45% तक कम करना है। यह लक्ष्य ऊर्जा दक्षता में सुधार और सतत विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

» भारत के द्वारा 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करना, जिससे दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित हो सके और भारत वैश्विक जलवायु कार्रवाई में अग्रणी बन सके।

- **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन:**
  - » भारत ने स्वच्छ ईंधन के रूप में हाइड्रोजन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन शुरू किया है, जिससे देश की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को और बढ़ावा मिलेगा तथा जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम होगी।
- **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना:**
  - » PLI योजना ने सौर फोटोवोल्टिक (PV) मॉड्यूल के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे आयात पर निर्भरता कम करते हुए भारत की सौर ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने की क्षमता बढ़ी है।

ऑपरेशन द्रोणागिरी: भारत की राष्ट्रीय भूस्थानिक नीति में महत्वपूर्ण विकास

सन्दर्भ: हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) दिल्ली में ऑपरेशन द्रोणागिरी की शुरुआत के साथ भारत ने राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 (NGP 2022) के अंतर्गत भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओं, नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। भू-स्थानिक डेटा पृथ्वी की सतह पर एक विशिष्ट स्थान से जुड़ी समय-आधारित जानकारी प्रदान करता है।

द्रोणागिरी की मुख्य विशेषताएं:

- **द्रोणागिरी का शुभारंभ**
  - » **दिनांक:** 13 नवंबर, 2024
  - » **स्थान:** IIT दिल्ली का इनोवेशन और टेक्नोलॉजी ट्रांसफर फाउंडेशन (FITT)
  - » **लक्ष्य:** कृषि, आजीविका, रसद और परिवहन में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता का प्रदर्शन करना और व्यावसायिक परिचालन को सुव्यवस्थित करना।
- **भू-स्थानिक डेटा का एकीकरण**
  - » ऑपरेशन द्रोणागिरी का उद्देश्य भू-स्थानिक डेटा को सार्वजनिक सेवाओं में एकीकृत करना, नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना और व्यापार को सरल बनाना है।
  - » फोकस क्षेत्र: कृषि, आजीविका, तथा रसद एवं परिवहन।
- **पायलट चरण कार्यान्वयन**
  - » यह पहल पांच राज्यों में शुरू की जाएगी: उत्तर प्रदेश, हरियाणा, असम, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र।
  - » इन राज्यों को उनकी विविध भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण चुना गया है, जिससे वे पायलट के लिए आदर्श परीक्षण स्थल बनते हैं।
- **साझेदारियां और सहयोग**
  - » इस परियोजना में भू-स्थानिक डेटा के वास्तविक-विश्व अनुप्रयोगों का परीक्षण करने के लिए सरकारी विभागों, उद्योगों, निगमों और स्टार्टअप्स के साथ सहयोग शामिल होगा।
  - » भू-स्थानिक डेटा एकीकरण के व्यावहारिक लाभों और सार्वजनिक सेवाओं पर इसके प्रभाव को प्रदर्शित किया जाएगा।

एकीकृत भूस्थानिक डेटा साझाकरण इंटरफेस:

- ऑपरेशन द्रोणागिरी का एक प्रमुख उद्देश्य एकीकृत भू-स्थानिक डेटा साझाकरण इंटरफेस (GDI) को प्रारंभ करना है, जो भू-स्थानिक डेटा के निर्बाध आदान-प्रदान, पहुंच और विश्लेषण को सुगम बनाने के लिए एक विशेष रूप से डिजाइन किया गया प्लेटफॉर्म है।
- **जीडीआई का उद्देश्य:**
  - जीडीआई का उद्देश्य भू-स्थानिक डेटा से कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करना, जिससे सार्वजनिक प्रशासन, व्यावसायिक रणनीतियों और अनुसंधान के लिए बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलेगी।
  - विभिन्न क्षेत्रों के हितधारकों के बीच अधिक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- **जीडीआई की मुख्य विशेषताएं:**
  - » **डेटा एक्सचेंज:** GDI उन्नत डेटा एक्सचेंज प्रोटोकॉल का उपयोग करके भू-स्थानिक डेटा का सुरक्षित और कुशल विनिमय सुनिश्चित करता है।
  - » **गोपनीयता और सुरक्षा:** यह प्लेटफॉर्म गोपनीयता-संरक्षण सुविधाओं को एकीकृत करता है, सहयोग को सक्षम करते हुए संवेदनशील डेटा की सुरक्षा करता है।
  - » **प्रभाव:** GDI आपदा प्रबंधन को बढ़ाएगा, शहरी बुनियादी ढांचे में सुधार करेगा और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय के साथ पर्यावरणीय परिवर्तनों की निगरानी करेगा।

राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 क्या है?

- राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 (NGP 2022) का उद्देश्य बुनियादी ढांचे का विकास, नवाचार को बढ़ावा देना और डेटा साझाकरण के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर भारत को भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी में ग्लोबल लीडर बनाना है।
- **नीति का दृष्टिकोण:**
  - » भू-स्थानिक क्षेत्र में ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित करना, नवाचार को बढ़ावा देना और एक समृद्ध भू-स्थानिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना।
  - » डिजिटलीकरण, सेवा वितरण में सुधार और भू-स्थानिक क्षेत्र के उदारीकरण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

- **संस्थागत ढांचा:**
  - » भू-स्थानिक डेटा संवर्धन और विकास समिति (GDPDC) भू-स्थानिक क्षेत्र के विकास के लिए रणनीति तैयार करने और NGP 2022 के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने में केंद्रीय भूमिका निभाएगी।

महत्वपूर्ण लक्ष्य:

- 2025 तक एक नीतिगत ढांचा तैयार करना जो भू-स्थानिक क्षेत्र के उदारीकरण का समर्थन करता हो।
- 2030 तक शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उच्च-रिज़ॉल्यूशन स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और मानचित्रण प्राप्त करना।
- 2035 तक शहरों का एक राष्ट्रीय डिजिटल ट्विन विकसित करना, जिससे गतिशील निर्णय लेने में सक्षमता हो।

विश्व में मधुमेह रोगियों का एक चौथाई हिस्सा भारत से

सन्दर्भ: हाल ही में विश्व मधुमेह दिवस (14 नवंबर, 2024) के अवसर पर द लांसेट में प्रकाशित अध्ययन ने वैश्विक मधुमेह महामारी पर गहरी चिंता व्यक्त की है। अध्ययन के अनुसार, विश्व की कुल मधुमेह जनसंख्या का एक चौथाई भाग भारत से है।

लांसेट अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष:

- **वैश्विक मधुमेह प्रसार:**
  - » 828 मिलियन वयस्क मधुमेह से प्रभावित।
  - » भारत में 212 मिलियन मधुमेह रोगी हैं, जोकि वैश्विक मधुमेह जनसंख्या का एक चौथाई है।
- **मधुमेह के अधिक मामले वाले अन्य देश:**
  - » चीन: 148 मिलियन
  - » अमेरिका: 42 मिलियन
  - » पाकिस्तान: 36 मिलियन
  - » इंडोनेशिया: 25 मिलियन
  - » ब्राजील: 22 मिलियन

अध्ययन में उपयोग किए गए नैदानिक मानदंड:

- **उपवास प्लाज्मा ग्लूकोज (एफपीजी):** 7.0 mmol/L (126 mg/dL)
- **HbA1c:** 6.5% या अधिक (तीन महीनों में औसत रक्त शर्करा)
- विशेषज्ञों का कहना है कि HbA1c और उपवास ग्लूकोज स्तरों (Fasting Plasma Glucose levels) को मानक मानकर भारत में मधुमेह की व्यापकता का अनुमान अधिक हो सकता है।
- एचबीए1सी को शामिल किए बिना, 2022 में भारत में मधुमेह की वास्तविक व्यापकता निम्नलिखित थी:
  - » महिलाओं में 14.4% (69 मिलियन)
  - » पुरुषों में 12.2% (62 मिलियन)
  - » कुल प्रसार: 131 मिलियन लोग
- यह आंकड़ा, जोकि एचबीए1सी के बिना है, लांसेट अध्ययन द्वारा प्रस्तुत 212 मिलियन के आंकड़े से काफी कम है।

उपचार अंतराल:

- 2022 में लगभग 59% वयस्कों (लगभग 445 मिलियन लोग) को मधुमेह के इलाज के लिए कोई दवा नहीं मिली। यह संख्या 1990 में 129 मिलियन लोगों की तुलना में काफी अधिक है, अर्थात् उपचार प्राप्त न करने वालों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है।
- भारत में 2022 में लगभग 64 मिलियन पुरुष और 69 मिलियन महिलाएं अनुपचारित मधुमेह (Untreated Diabetes) से पीड़ित थीं।
- उपचार की कमी के कारण निम्नलिखित जटिलताओं का खतरा बढ़ जाता है:
  - » अंगविच्छेद जैसी शल्यक्रियाएं
  - » हृदय रोग
  - » गुर्दे की क्षति
  - » दृष्टिहीनता
  - » असमय मृत्यु

मधुमेह क्या है?

- मधुमेह एक चिकित्सा स्थिति है, जोकि तब उत्पन्न होती है जब शरीर रक्त शर्करा (ग्लूकोज) के स्तर को समुचित रूप से नियंत्रित नहीं कर पाता। रक्त शर्करा शरीर की कोशिकाओं के लिए ऊर्जा का एक आवश्यक स्रोत है, परंतु इसके स्तर को नियंत्रित रखना अत्यंत आवश्यक होता है। जब यह संतुलन विघटित होता है, तो रक्त शर्करा का स्तर अत्यधिक बढ़ सकता है या घट सकता है, जो समय के साथ विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं को उत्पन्न कर सकता है।
- **मधुमेह के दो मुख्य प्रकार हैं:**
  - » टाइप 1 मधुमेह
  - » टाइप 2 मधुमेह, साथ ही एक स्थिति जिसे गर्भावधि मधुमेह कहा जाता है।
- टाइप 1 मधुमेह एक ऑटोइम्यून स्थिति है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली अग्न्याशय में इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं (बीटा कोशिकाओं) पर हमला करती है और उन्हें नष्ट कर देती है। इंसुलिन एक हार्मोन है, जो ग्लूकोज को कोशिकाओं में प्रवेश करने और ऊर्जा के रूप में उपयोग करने में मदद करता है।
- टाइप 2 मधुमेह तब होता है जब शरीर इंसुलिन के प्रति प्रतिरोधी हो जाता है, अर्थात कोशिकाएं इंसुलिन के प्रति प्रभावी रूप से प्रतिक्रिया नहीं करतीं। समय के साथ, अग्न्याशय रक्त शर्करा के सामान्य स्तर को बनाए रखने के लिए पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर पाता।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

आनुवंशिक कारक, खराब आहार, शारीरिक निष्क्रियता और मोटापा टाइप 2 मधुमेह के विकास में योगदान करते हैं।

अफ्रीकी हाथियों के अस्तित्व पर संकट

सन्दर्भः हाल के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अफ्रीका के सवाना और जंगली हाथी तीव्र गति से विलुप्ति के कगार पर पहुँच रहे हैं। इसका प्रमुख कारण अवैध शिकार और उनके प्राकृतिक आवासीय क्षेत्रों का क्षरण है। यह स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि इन महत्वपूर्ण प्रजातियों के अस्तित्व पर गहरा संकट उत्पन्न हो गया है।

हाथियों की आबादी में भारी गिरावटः

- उप-सहारा अफ्रीका के सर्वेक्षण स्थलों पर सवाना हाथियों की जनसंख्या में औसतन 70% की कमी दर्ज की गई है।
- सवाना हाथियों के छोटे और मायावी चचेरे भाई, वन हाथियों की जनसंख्या में और भी अधिक गिरावट आई है। कई सर्वेक्षण स्थलों पर उनकी संख्या में 90% तक की कमी देखी गई है।
- यह गिरावट 37 अफ्रीकी देशों के 475 सर्वेक्षण स्थलों के आंकड़ों पर आधारित है, जो कुल मिलाकर 77% औसत जनसंख्या कमी को दर्शाती है।

अफ्रीकी हाथियों की संख्या में गिरावट में योगदान देने वाले प्रमुख कारकः

- **अवैध शिकारः**
  - » हाथियों का अवैध शिकार उनके हाथी दांत के लिए किया जाता है, जिसकी काले बाजार में भारी मांग है, विशेष रूप से एशिया (चीन, वियतनाम आदि) में।
  - » हर साल औसतन 20,000 से 30,000 हाथी दांत के लिए मारे जाते हैं, जिससे उनकी संख्या में तेजी से गिरावट हो रही है।
- **प्राकृतिक आवास का क्षरणः**
  - » कृषि विस्तार, वनों की कटाई और मानव बस्तियों के कारण हाथियों के प्राकृतिक आवास पर अतिक्रमण हो रहा है, जिससे आवास विखंडन और जनसंख्या में कमी हो रही है।
- **सीमित सुरक्षाः**
  - » कई क्षेत्रों में संरक्षण के प्रयास अपर्याप्त हैं और हाथियों को उचित सुरक्षा नहीं मिल पा रही है। कमजोर कानून प्रवर्तन और संसाधनों की कमी प्रभावी वन्यजीव संरक्षण में बाधा डालती है, जिससे अवैध शिकार और आवास विनाश बेरोकटोक जारी रहता है।
- **क्षेत्रीय विविधताः**
  - » हालाँकि समग्र प्रवृत्ति चिंताजनक है, कुछ क्षेत्रों में प्रभावी संरक्षण उपायों के कारण हाथियों की संख्या में सुधार देखा गया है।
  - » दक्षिणी अफ्रीका क्षेत्र के बोत्सवाना, जिम्बाब्वे और नामीबिया जैसे देशों में सर्वेक्षण स्थलों में से 42% में हाथियों की आबादी में वृद्धि देखी गई है।
  - » इसके विपरीत, पश्चिम अफ्रीका और साहेल क्षेत्र (माली, चाड, नाइजीरिया आदि) में अवैध शिकार, अपर्याप्त संरक्षण और राजनीतिक अस्थिरता के कारण हाथियों की आबादी समाप्ति की स्थिति में है।
- **संरक्षण की स्थितिः**
  - » जंगली हाथियों को वर्तमान में IUCN की लाल सूची में 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है, जबकि सवाना हाथियों को 'संकटग्रस्त' श्रेणी में सूचीबद्ध किया गया है।

पारिस्थितिकी तंत्र में हाथियों का महत्व

- हाथी पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'प्रमुख प्रजाति' हैं। उनके योगदान निम्नलिखित हैं:
  - » **बीज फैलावः** हाथी विभिन्न फल एवं पौधे खाते हैं और अपनी गतिविधियों के माध्यम से बीजों का प्रसार करते हैं, जिससे जंगलों और सवाना के पुनर्जनन में सहायता मिलती है।
  - » **जल स्रोतः** हाथी जल स्रोतों का निर्माण और रखरखाव करते हैं, जो विशेषकर शुष्क मौसम में अन्य वन्यजीव प्रजातियों के लिए अत्यावश्यक जल संसाधन उपलब्ध कराते हैं।
  - » **पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखनाः** हाथी वनस्पति की वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, कुछ पौधों की प्रजातियों की अतिवृद्धि को रोकते हैं और अपने आवास में अन्य पौधों और जानवरों के अस्तित्व को सुनिश्चित करते हैं।
- हाथियों की अनुपस्थिति में ये महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक प्रक्रियाएं बाधित हो जाएंगी, जिससे संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इनका संरक्षण आवश्यक है ताकि प्राकृतिक संतुलन बना रहे और जैव विविधता सुरक्षित रह सके।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

16 November 2024

पॉवर पैक्ड न्यूज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को डोमिनिका का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान मिलेगा

- डोमिनिका राष्ट्रमंडल ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान, डोमिनिका अवार्ड ऑफ ऑनर देने की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान भारत और डोमिनिका के बीच संबंधों को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- यह पुरस्कार डोमिनिका राष्ट्रमंडल के राष्ट्रपति सिल्वी बर्टन द्वारा 19 से 21 नवंबर, 2024 तक जॉर्जटाउन, गुयाना में आयोजित होने वाले भारत-कैरिकॉम शिखर सम्मेलन के दौरान प्रदान किया जाएगा।
- फरवरी 2021 में भारत ने डोमिनिका को एस्ट्राजेनेका कोविड-19 वैक्सीन की 70,000 खुराक दी, जोकि डोमिनिका की महामारी प्रतिक्रिया में मददगार साबित हुई। इसने द्वीप में टीकाकरण के प्रयासों को सहारा दिया और पड़ोसी कैरेबियाई देशों का भी समर्थन किया। डोमिनिका अवार्ड ऑफ ऑनर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत द्वारा स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में निरंतर सहायता को भी मान्यता देता है।
- **डोमिनिका के बारे में:** डोमिनिका, जोकि 1978 से राष्ट्रमंडल का हिस्सा है, एक ज्वालामुखी द्वीप है जो लेसर एंटिलीज में स्थित है। यह अपनी कैरिबियन भारतीय आबादी और समृद्ध जलोढ़ मिट्टी के लिए प्रसिद्ध है। यहां की प्रमुख भौगोलिक विशेषताओं में माउंट डायब्लोटिन्स और माउंट ट्रोइस पिटोन्स शामिल हैं।

जनजातीय गौरव दिवस

- 15 नवम्बर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है, जोकि आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों की वीरता को सम्मानित करने और भगवान बिरसा मुंडा की याद में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के जमुई में बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के अवसर पर कई घोषणायें की।
- प्रधानमंत्री ने भगवान बिरसा मुंडा के सम्मान में एक स्मारक सिक्का और डाक टिकट का अनावरण किया। बिरसा मुंडा, जिन्हें आदिवासी समुदायों के बीच साहस और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में सम्मानित किया जाता है, ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ संघर्ष किया और आदिवासी अधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया।
- समारोह के दौरान, प्रधानमंत्री ने 6,640 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया, जिनका उद्देश्य बुनियादी ढांचे में सुधार और ग्रामीण तथा दूरदराज के क्षेत्रों के आदिवासी समुदायों का उत्थान करना था।
- ये परियोजनाएं सरकार के उस उद्देश्य के अनुरूप हैं, जिसके तहत आदिवासी विरासत को सम्मानित करते हुए हाशिए पर पड़ी जनसंख्या के सामने आने वाली सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान किया जा रहा है।
- जनजातीय गौरव दिवस जनजातीय नेताओं के वीरतापूर्ण योगदान को श्रद्धांजलि देता है और समावेशी विकास को बढ़ावा देते हुए भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।

झिरी मेला

- हाल ही में जम्मू शहर में झिरी मेला प्रारंभ हुआ है। यह मेला जम्मू के झिरी गांव के बाहरी इलाके में आयोजित किया जा रहा हैं। यह मेला 16वीं शताब्दी के डोगरा नायक बाबा जित्तो के सर्वोच्च बलिदान की याद में मनाया जाता है। इस मेले में बाबा जित्तो को स्थानीय जमींदार द्वारा धोखा दिए जाने के बाद, अन्याय के खिलाफ खड़ा होने और सत्य तथा न्याय के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए श्रद्धांजलि दी जाती है।
- यह मेला हर वर्ष लगभग 20 लाख आगंतुकों को आकर्षित करता है, जो क्षेत्रीय एकता, ईमानदारी और साहस को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है। पूरे क्षेत्र से तीर्थयात्री बाबा जित्तो को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए झिरी आते हैं, जिससे यह आयोजन एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उत्सव बन जाता है। मेले में पारंपरिक कला और शिल्प का भी प्रदर्शन किया जाता है, जिससे स्थानीय कारीगरों को अपने कौशल को व्यापक दर्शकों के सामने प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।
- सरकारी विभाग मेले में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और ग्रामीण विकास योजनाओं तथा कल्याणकारी कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए इस मंच का उपयोग करते हैं। यह आयोजन जम्मू-कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है और अखंडता तथा लचीलेपन जैसे मूल्यों पर जोर देकर सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देता है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com